(i) सुखवाद (Hedonism)

12·1 विषय-प्रवेश

किसी भी नियम को, चाहे वह बाह्य हो या आन्तरिक, नैतिकता का मापदण्ड मानना पर्याप्त नहीं है। नियम किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए होते हैं, अतः हमें यह जानना चाहिए कि सही उद्देश्य कौन है। यह जान लेने पर ही हम कर्मों का निर्णय कर सकते हैं वे शुभ हैं या अशुभ। वैसे कर्म, जिससे उद्देश्य की सिद्धि होती है, शुभ (good) हैं और नहीं तो अशुभ (evil)। कर्मों का वास्तविक मूल्यांकन जीवम के चरम उद्देश्य (summum bonum) के सम्बन्ध में ही हो सकता है। इसलिए कुछ विचारकों ने जीवन के चरम लक्ष्य को ही चरम नैतिक मापदण्ड विचारा है। अब समस्या यह है कि जीवन का चरम लक्ष्य क्या है ? इसके सम्बन्ध में मतभेद है। कुछ विद्वानों ने 'सुख' को और कुछ ने 'आत्म-पूर्णता' (perfection) को चरम लक्ष्य बतलाया है। पहले हम सुखवाद की व्याख्या करेंगे।

12·2 सुखवाद

कतिपय विद्धानों का मत है कि सुख प्राप्त करना ही जीवन का अन्तिम उद्देश्य है। इसलिए वैसे कर्म, जो सुख-प्राप्ति के साधन हैं, शुभ (good) और वे जिनसे इस लक्ष्य की सिद्धि नहीं होती, अशुभ (evil) हैं। इस मत को सुखवाद (hedonism) कहा जाता है, क्योंकि इसके अनुसार सुख (hedone = pleasure) ही चरम शुभ (highest good) है। किसी भी कर्म को सुख और दुःख के ही कांटे पर तौलना चाहिए। सुख का अर्थ है दुःख का अभाव।

उपर्युक्त मत मनुष्य की भावना (sensibility) को ही प्रधान मानता है। मनुष्य-स्वभाव में दो तत्त्व है—भावना और बुद्धि। इसमें वे भावना-प्रसूत क्रिया को ही मनुष्य की सबसे उत्कृष्ट (highest) क्रिया मानते हैं। बुद्धि केवल भावनाओं को तुष्ट करने का साधन है। यदि उससे हमारी भावना या इच्छा की तृप्ति होती है, तो वह शुभ है। पर भावनाएँ तो स्वतः शुभ हैं यदि वे आनन्ददायक हैं। प्रत्येक कर्म में इच्छा होती है। यदि उस इच्छा की पूर्ति हो जाती है तो सुख मिलता है और नहीं, तो दुःख। इसलिए इच्छाओं की पूर्ति ही जीवन का वास्तविक नियम है—परम शुभ है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी इच्छाओं या वासानाओं को तृप्त करे, जिससे उसे सुख मिले; क्योंकि सुख प्राप्त करना ही चरम लक्ष्य है। सुखवादी सिद्धान्त को इसीलिए भावना-प्रधान नीतिशास्त्र (ethics of sensibility) कहा जाता है।

सारांश—(i) कोई भी नियम किसी लक्ष्य का साधन है, अतः उसे चरम नैतिक मापदण्ड नहीं माना जा सकता।

(ii) जीवन का आदर्श लक्ष्य ही चरम नैतिक मापदण्ड हो सकता है।